कक्षा-12

पाटलि

भाग-2

पाटलि

भाग -2

[मगही भासा के 12वाँ कक्षा के पाठ्य पुस्तक]

(राज्य शिक्षा-शोध आ प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण-परिषद् बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 35.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा संजयश्री आफसेट प्रिंटर्स, नयाटोला, भिखना पहाड़ी, पटना-800 004 द्वारा एच. पी. सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोम (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर 5000 प्रतियाँ 24 × 18 सेमी साईज में मुद्रित।

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार जुलाई 2007 से राज्य के उच्च माध्यमिक (कक्षा XI-XII) ला एगो नया पाठ्यक्रम लागू कैल गेल हे। नया पाठ्यक्रम के आलोक में भासा के पुस्तक के विकास एस.सी.ई.आर.टी., पटना द्वारा तथा आवरण डिजाइनिंग आउ मुद्रण बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम के द्वारा कैल गेल हे। ई पुस्तक ओहि शृंखला के एगो कड़ी हे।

बिहार राज्य में विद्यालयीय (कक्षा- I-XII) के गुणवत्तापूर्ण सशक्तीकरण ला कृतसंकल्पित शिक्षा के समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग-निर्देशन के प्रति हम कृतज्ञ ही।

हमरा आशा हे के ई पुस्तक राज्य के वर्त्तमान आउ भावी पीढ़ी ला ज्ञानोपयोगी सिद्ध होएत। एस.सी.ई.आर.टी. के निदेशक के हम अभारी ही, जिनकर नेतृत्व में ई पुस्तक के विकास कैल गेल।

हमरा आशा नऽ, पूर्ण विश्वास हे कि ई पुस्तक शिक्षार्थी ला ज्ञानवर्धक आउ उपलब्धि-स्तर के वृद्धि में सहायक होएत। संवर्द्धन आउ परिष्करण के संभावना हमेशा भविष्य के गोद में सुरक्षित रहत। प्रकाशन आउ मुद्रण में निरंतर अभिवृद्धि के प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रगण, अभिभावकगण, शिक्षकगण, शिक्षाविद के टिप्पणी आउ सुझाव के हरदम स्वागत करतन जेकरा ले बिहार राज्य के देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलावे में हमर प्रयास सहायक सिद्ध हो सकत।

हसनैन आलम, भा० प्र० से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

दिशा बोध

डॉ. हसन वारिश, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना

श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक) बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना-1

डॉ० सैयद अब्दुल मुईन, विभागाध्यक्ष, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

अध्यक्ष : **श्री बाबू लाल मधुकर**, लोहिया नगर, ब्लम-105, कंकड़बाग, पटना

समन्वयक : **श्री घमण्डी राम**, बल्लमीचक, अनीसाबाद, पटना-2

सह-समन्वयक : **श्री हरीन्द्र विद्यार्थी**, तिलकनगर, रुकनपुरा, बेली रोड, पटना-14

सदस्य : **डॉ. अभिमन्यु प्रसाद मौर्य**, रामलखन महतो फ्लैट, पुराना अक्कनपुर, पटना

श्री चंद प्रकाश माया, पुष्पांजलि कुंज, आशियाना मार्ग, बेली रोड, पटना-25

अकादमिक सहयोग :

डॉ० कासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

डॉ० अर्चना, व्याख्याता, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

श्रीमती वीर कुमारी कुजूर, व्याख्याता, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

डॉ० सूर्य कुमार झा, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

डॉ० सुरेन्द्र कुमार, व्याख्याता भाषा, विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

इम्तियाज आलम, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

डॉ० स्नेहाशीष दास, व्याख्याता, भाषा विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., पटना

समीक्षा समिति के सदस्य :

प्रो० दिनेश दिवाकर, आर्ट्स एण्ड कामर्स कॉलेज, पटना

श्री राज कुमार प्रेमी, रमना रोड, पटना

डॉ० किरण कुमारी शर्मा, मु. नौमी, पो. नौमी, जिला-शेखपुरा

अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम आउ पाठ्य पुस्तक विकास समिति

श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट)

एस० सी० ई० आर० टी०, महेन्द्रू, पटना

परस्तावना

मगही मगध इलाका के जन–जन के भासा हे। ई भासा सिद्ध–नाथ सम्प्रदाय से लेके समराट अशोक आउ महात्मा बुद्ध के समय से कभी गिरइत कभी उठइत आज तक विकसित होइत आयल हे। ई भासा विविधता से भरल हे। एकर साहित आउ इलाका बड़हन आउ फैलल हे। एकर फैलल साहित भिन्न-भिन्न भासा–भासी, तरह-तरह के धरम–सम्प्रदाय, अनेक जाति, लोक संस्कृति आउ विचार धारा द्वारा सम्बर्द्धित आउ संवहित–संचरित होते आयल हे।

एकर इतिहास हजारो बरिस के राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक आउ सांस्कृतिक उथल–पुथल से भरल हे। भारत के जन–जन के आसा–उम्मीद, हर्स–विसाद, संकल्प–विकल्प के अथाह करुना-भाइचारा, सांति–परेम के रूप में एकर अभिव्यक्ति होल हे। आदर्स आउ जथार्थ, सपना आउ अभिलासा के करोड़ो–करोड़ विघिन–बाधा, रुकावट–अवरोध के ई भासा साच्छात् धरोहर हे।

मगही भासा–साहित के लमहर इतिहास में फुनगी से जड़ तक ले तरह-तरह के परविरती आउ परम्परा बनल आउ विलीन भेल। ई कभी घायल भेल, कभी अप्पन स्वरूप बदल लेल तो कभी अनगढ़ से सुन्दर चेहरा लेके जनमानस के सामने परगट भेल।

मगही भासा के माथा पर केतना अघात पहुँचावल गेल तइयो ई आज ले जिन्दा आउ विहँसित हे। पुरनका जमाना में चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, बुद्ध, महावीर के समय से ई भासा के रजनीतिक संरच्छन आउ सुरच्छा–परचार–परसार के बरदहस्त मिलइत गेल हे। आम जनता ई भासा के अप्पन हिरदा में साट के रखले रहल आउ करुना–ममता से आँख-सिर पर बइठयले रहल। ई भासा बड़ा सबदगर आउ ताकतवर भी हे एही कारन हे कि ई विदेसी भासा के सबद के भी मगहीकरन कर देवऽ हे। केस ट्रान्सफर हो गेल तऽ मगही में केसवा टनेसफर हो गेल। अइसन हजारो उदाहरन मिलत।

बौद्ध धरम आउ मत के परचार के चलते ई भासा के पैर लंका से लेके इंडोनेसिया, जावा, सुमात्रा तक पसर गेल। एकर विजय के डंका देस–विदेस सब

जगह जोरदार ढंग से बजइत रहल। काबुल से लेके चीन, जापान, थाइलैंड, बर्मा, श्रीलंका, नेपाल, मौरीसस, सुरीनाम, फीजी, ट्रिनीनाड तक मगही के परचार–परसार भेल।

ई भासा चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त, अशोक, जरासंध के काल में सउँसे देस यानि मगध के एकता के सूत्र में बाँधले रहल। केतना विदेसी आक्रमन भेल मगध के राजसत्ता पर तइयो ई राजभासा आउ रास्ट्रभासा के रूप में आदर पावित रहल। भारत के इतिहास मगध सम्राज्य के इतिहास हे। भारत के इतिहास से मगध के इतिहास हटा देवल जाय तो भारत के इतिहास सिकुड़ के एगो टोकरी में सिमट जायत।

विदेसी आकरमनकारी हिंया के सभ्यता-संस्कृति, साहित–इतिहास के घवाहिल करते रहलन। ऊ समय भी ई भासा परेम, सांति आउ भाइचारा के मरहम लगावित रहल आउ इनसानियत के बचयले रहल।

नालन्दा विस्वविद्यालय, तक्षशिला विस्वविद्यालय, विक्रमशिला विस्वविद्यालय पर हमला आउ आग के हवाले कर देना आज भी हमनी के हिरदय के दहला देवऽ हे।

ई भासा आजादी के आन्दोलन में देस के जनता के अवाज बनल। मगही में लिखल बौद्ध आउ जैन धरम के ग्रन्थ एसिया महादेस में उनकर अनुआयी के सत्य, अहिंसा आउ सच्चाई के मारग पर बढ़ेला परेरना स्रोत बनल हे।

आज मगही अप्पन विकास ला केकरो सामने हाथ पसारे न जायत। आज ई एतना समृद्ध आउ सच्छम हो गेल हे कि साहित के भिन्न-भिन्न विधा, रस, अलंकार, छन्द के रूप में मगही भासा नालन्दा खुला विस्वविद्यालय, मगध विस्वविद्यालय बोध गया में एम. ए. तक पढ़ावल जा रहल हे। साथ ही डिग्री कोर्स में पढ़ाई हो रहल हे। सरकार के ई निरनय सराहनीय हे कि पहिला कलास से एम. ए. तक ई भासा के पढ़ाई होवे। आज ई भासा तरह-तरह के कोर्स में सामिल होके अप्पन साहित्यक महत्ता से दूसर भासा–भासी के अवगत करा रहल हे।

मगही एक के बाद दूसर सफलता के सोपान पर चढ़ रहल हे। एही से महान बेआकरनाचार्ज कच्चान एकरा 'सा मागधी मूल भासा' के ताज से गौरवान्वित करलन, नाटक, फिलिम, कैसेट के छेत्तर में भी मगही अप्पन सिक्का जमयले हे। उपन्यास, महाकाव्य, कहानी के छेत्तर में ई कउनो भासा से उनइस नयँ हे। एक

जमाना में मगही 'कैथी' लिपि में लिखल जा हल। आज ई देवनागरी लिपि में लिखल जा रहल हे।

मगही देस के गंगा-जमुनी संस्कीरती के मजबूत करे में बिस्वास रखऽ हे। मगही, मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, बज्जिका आदि भासा ऊ छोट-मोट नदियन के समान हे जे गंगा रूपी हिन्दी के ससक्त आउ मजबूत करे में विस्वास रखऽ हे। बहुत अइसन दूसर-दूसर प्रान्त के भासा हे जेकरा ई आदर के नजर से देखऽ हे आउ ओकर विकास-परचार-परसार लागी अप्पन ऊर्जा समरपित करऽ हे। संस्कृत, उर्दू, बंगला, उड़िया, असमिया, गुजराती, नागपुरिया, खोरठा, अँगरेजी आदि के ई मगही भासा अप्पन हिरदा के सिंहासन पर बइठा के रखऽ हे। मगही अप्पन बहिन मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, बज्जिका से भी बढ़िया सम्बन्ध रखेला चाहऽ हे।

माय के बोली में एगो अबरननीय मिठास होवऽ हे। ओही मिठास माय के बोली मगही में पावल जा हे। मगही भासा-भासी जन-जन के साथ ई मगही भासा जुड़ल हे। बुतरू के हाव-भाव उच्चारन आउ अभिव्यक्ति पर मगही के गहरा परभाव हे।

मगही सिच्छन के तकाजा हे कि लइकन के उच्चारन, वर्तनी, वाक्य, रचना आउ अभिव्यक्ति के एगो मानकीकरन दन्ने ले जायल जाय। मगही में ई कहाउत बिल्कुल सटीक जँचऽ हे कि 'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी'। हल्का-फुल्का छेत्रगत फरक तो होवे करत। तइयो भिन्नता में एकता बरकरार रखना साहित के सत्यं शिवं सुन्दरं के पुजारी बने के समान हे।

रचनाकार के धन्यवाद। पाठय पुस्तक समिति के सदस्य के धन्यवाद। सिच्छक से अपेच्छा हे कि ऊ ई पाठ्य-पुस्तक के छात्र-छात्रा के सहभागिता के साथ रोचक बनाके अध्ययन-अध्यापन करथ आउ अप्पन बेसकीमती सुझाव से परिषद् के अवगत करावथ।

2 अगस्त, 2007

डॉ० हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं
प्रशिक्षण परिषद्, पटना

पाठ–सूची

गद्य

क्र०		पृस्ठ
1.	बिहारी संस्कीरती के पहचान *डॉ० सम्पत्ति अर्याणी*	1
2.	बिहार विधान परिसद् में भासन *रामईश्वर सिंह*	13
3.	जुद्ध न होवे *डॉ० रामनंदन*	19
4.	विद्या *डॉ० दशई सिंह*	28
5.	दरकल खपरी *मिथिलेश*	36
6.	विनोबा जी *राम विलास 'रजकण'*	48
7.	दहाड़ *शैवाल*	58
8.	जोगाड़ *प्रेम कुमार मणि*	66
9.	सनेह के आँधी *अनंत कुमार सिंह*	80
10.	नईम मास्टर के दुस्मन *खुर्शीद आलम*	87
11.	मेहुदायल बुल्लेट *नरेन*	93
12.	भक्त भेलन भगवान *अलखदेव प्रसाद 'अचल'*	107

पद्य

क्रम पृस्ठ

1. पद 114
संत धरमदास

2. हम्मर बगिया के रंग-बिरंग फूल 118
जयराम सिंह

3. इसरा महादे 122
राम सिंहासन सिंह विद्यार्थी

4. ए मलकिनी तनी भात देबऽ 127
कृष्ण मोहन प्यारे

5. कहाँ भुलायल गाँव? 130
विश्वनाथ मिश्र पंचानन

6. अधरतिया के बँसुरी 134
कुमारी राधा

7. भूलल-बिसरल गाँव 139
परेश सिन्हा

8. अपना के पहचानऽ 145
कारू गोप

9. ठठा-ठठा के बरसलो हे मेघ, बरसे दऽ 149
मृत्युंजय मिश्र "करुणेश"

10. बिहार-गौरव 153
राम नरेश प्रसाद वर्मा

11. जिन्दगी अतुकान्त कविता 157
सतीश कुमार मिश्र

12. इतिहास 162
राकेश प्रियदर्शी